रामदरश मिश्र की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन

- दिगंत बोरा

शोध सार :

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में स्वाधीन भारत के पिछड़े गाँव तथा परिवेश का यथार्थ वर्णन किया है। देश को आजादी मिली, परन्तु लोग और गाँव अब भी पिछड़े हुए हैं। न गाँव में अस्पताल है, न डाक्टर। चारों ओर लोग गरीबी, अकाल, भुखमरी से त्रस्त हैं। लोग जिंदा रहने के लिए पेड़ की छाल, गोबर से खाना निकाल कर खाने के लिए विवश हैं। 'दक्षिणा' कहानी में केवल समाज में व्याप्त कर्मकांड का ही विरोध नहीं हुआ है। पंडितों को घर से जाने के लिए कहकर माधो ने परंपरा से चला आ रहा डर को भी दूर करता है। ठीक उसी तरह 'एक वह' कहानी में गाँव से शहर में जाकर चने-मुरमुरे बेचने वाले ताऊ के माध्यम से पारिवारिक विघटन और लोगों की विवशता का वर्णन हुआ है। यहाँ केवल समाज में व्याप्त कर्मकांड का ही विरोध नहीं हुआ है। पंडितों को घर से जाने के लिए कहकर माधो ने परंपरा से चला आ रहा डर को भी दूर करता है। लोग किस तरह गाँव से शहर जाकर सड़क पर अपना जीवन व्यतीत करता है और उसी सड़क पर किसी साधारण बीमारी से बिना दवा के मर जाते हैं। रामदरश मिश्र एक सशक्त कहानीकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में भारतीय समाज जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

बीज शब्द : मानवीय मूल्य, सामाजिक जीवन, भूमंडलीकरण, पारिवारिक विघटन

रामदरश मिश्र हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी लेखनी साहित्य के लग-भग सभी विधाओं में चलायी। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा, आलोचना आदि विधाओं में अपनी रचनाएँ लिखी है। "रामदरश मिश्र के लेखक व्यक्तित्व पर विचार करते हुए साहित्य के तमाम प्रतिमान हमारे सामने मुखर हो उठते हैं। उनका व्यक्तित्व, कवित्व, किस्सागोई, गजलगोई, गद्य सामर्थ्य, संस्मरण, ललित निबंध, यात्रा वृत्तान्त और उनके गीत - सब मिलकर एक ऐसे लेखक की छवि निर्मित करते हैं, जिसके भीतर सदियों का संताप,

आह्लाद, उत्सवता, रोज बनती दुनिया के अनुभव और साहित्यिक मूल्यों को स्थापित करनेवाले प्रगतिशील तत्त्व विद्यमान हैं।"[1]

ओम निश्चल कहते हैं कि -"एक बात और जोड़ देकर कहना चाहूँगा कि वे रेणु और प्रेमचंद के बाद की पीढ़ी के ग्रामीण रचनाकार हैं, सो वे ग्रामीण भारत की समस्याओं को नहीं भूलते, अपने इलाके का दर्द नहीं भूलते। वहां का सामंती आचरण, दरिद्रता, गरीबी, मान-अपमान, अहं पर जीता सवर्ण समुदाय, भूख के लिए विवश दलित और वंचित - सब उनकी निगाह में हैं। उनकी कहानियाँ इन सभी मुद्दों को उठाती हैं।"[2]

रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में तत्कालीन भारतीय समाज और संस्कृति का जीवंत चित्रण किया है। रामदरश मिश्र ने तत्कालीन समाज का सजीव वर्णन करने के लिए समाज में व्याप्त गरीबी, भुखमरी, वर्ण-भेद, शोषण, अनमेल विवाह, दहेज़ की समस्या, धर्म के नाम पर शोषण, अंधविश्वास आदि का चित्रण किया हैं। "रामदरश जी किसी वैचारिकता के प्रभाव में आए बिना समाज के सुख-दुःख से वाबस्ता कहानियाँ रचते रहे। 'एक रात', 'और बेला मर गई', 'पड़ोसन', 'मृत्यु', 'कहाँ जाओगे', 'मुक्ति', 'एक औरत एक जिंदगी', 'सर्पदंश', 'इज्जत', 'फिर कब आयेंगे', जैसी उनकी तमाम कहानियाँ हैं, जिनमें भिन्न भिन्न विषयवस्तु पर घर, गाँव, समाज, परिवार, रिश्तों, दहेज़ उत्पीड़न, ऊंच-नीच, ईर्ष्या द्वेष, स्त्री होने की नियति और अनमेल विवाह आदि विसंगतियों को उन्होंने वाणी दी है।"[3]

ओम निश्चल लिखते हैं कि - "एक कथाकार के रूप में रामदरश मिश्र का मन करुणा और सहानुभूति से भीगा हुआ लगता है। उनकी कहानियाँ प्रेमचंद के बाद के गाँव समाज का आईना हैं। वे निचले तबके के लोगों के उजले चरित्रों और ऊँचे तबके के लोगों के निम्नतर चरित्र के ढके-मुदे पतन की गाथा भी कहती हैं। वे यह जतलाती हैं कि आधुनिकता और भूमंडलीकरण ने भले ही बहुत कुछ बदला है, पर अभी मनुष्य का चरित्र नहीं बदला। ऊँच-नीच की खाइयाँ समाप्त नहीं हुई हैं। ये कहानियाँ बार-बार पढ़ी जाती हुई भी हर बार अपने कथ्य में नई लगती हैं।"[4]

रामदरश मिश्र ने अपनी कहानी 'दक्षिणा' में धर्म के नाम पर होने वाले शोषण का चित्रण किया है। पंडित और महापात्र धर्म के नाम पर लोगों का शोषण करते हैं। वे धर्म के नाम पर स्वर्ग, नरक, मोक्ष का भय दिखाकर लोगों का शोषण करते रहे हैं। पंडित और महापात्र इस बात पर अड़ जाता है कि जजमान को गाय देना ही होगा। अन्यथा मृतक की आत्मा को शान्ति मिल

सकती। परन्तु एकमात्र गाय ही माधो के जीवन का सहारा है। माधो अंत तक गाय नहीं देता है और महापात्र को घर से जाने के लिए कहता है। माधो महापात्र से कहता है कि "रहने दो पंडित, अपना पूजा-पाठ। मेरे बाबू अपने बेटे और पोते के मुँह से दूध छीनकर खुद नहीं पीना चाहेंगे। जाओ, पंडित जी अपने घर जाओ, मेरे बाबू की आत्मा को भटकने दो। और सुनो, आत्मा भटकती है पापियों की, मेरे बाबू पापी नहीं थे।"[5] प्रस्तुत कथन के द्वारा माधो ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा धर्म के नाम पर होनेवाले शोषणों का विरोध करता है। यहाँ केवल समाज में व्याप्त कर्मकांड का ही विरोध नहीं हुआ है। पंडितों को घर से जाने के लिए कहकर माधो ने परंपरा से चला आ रहा डर को भी दूर करता है। धर्म के भय से ही लोग पंडितों की हर बात स्वीकार करता है। माधो साहस के साथ गलत को गलत कहकर मानने से इनकार करता है। "कथाकार ने यहाँ न केवल अंधविश्वास, कर्मकांड, पुरोहिती प्रलोभन को नकारा है बल्कि माधो जैसे पात्र में यह दुस्साहस भी भरा है कि वह अपने से बड़ों का भी गलत और अस्वीकार्य मुद्दे पर दृढ़ता से विरोध कर सके।"[6]

'जमीन' समाज में प्रचलित झूठे नारे पर आधारित कहानी है। यह कहानी झूठे नारे का पर्दाफाश करती है। विद्यार्थी मोहन को बचपन में सुनी बातें याद आती है। यह जमीन सबकी है, पानी सबका है। ईश्वर ने सबको एक समान बनाया है। परन्तु समाज में इन सभी बातों का उलटा घटित होता है। न तो यह जमीन सबकी है, न पानी पर सबका अधिकार है। भूख के मारे यदि कोई किसी की जमीन से कुछ अनाज उखार लाये तो जमीन का मालिक उसे मारने के लिए आता है। प्यास के मारे यदि उच्च वर्ग के कुएँ से पानी पी ले तो निम्न वर्ग के कहकर पीटना शुरू कर देता है। तो जमीन कैसे सबकी हुई। पानी पर किस तरह सबका अधिकार सिद्ध हुआ है। मोहन के पिता को इन झूठे आश्वासनों के बारे में ज्ञात है। वह अपने बेटे मोहन को आजादी के पहले से सुनी बातों को कहता है। वह आजादी के पहले से ही सुन रहा है कि आजादी के बाद जमीनों पर सबका अधिकार होगा। सबको जीने के लिए सभी सुविधाएँ मिलगी। वह कहता है - "बचवा छोड़ इन बातों को, ये बातें मैं तब से सुन रहा हूं जब मैं सुराजी था और झंडा लेकर गाँव गाँव घुमा करता था। इन मंत्री के साथ मैंने भी जेल काटी है बचवा। वे मंत्री हो गए हैं और मैं..... ।"[7]

कहानीकार रामदरश मिश्र ने 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' कहानी में समाज में व्याप्त अकाल, भुखमरी और गरीबी का यथार्थ वर्णन किया है। अकाल और भुखमरी इस तरह फैली है कि मनुष्य के लिए भोजन नहीं है, जीव-जंतु के लिए भी चारा नहीं मिलता है। चारा की

कमी के कारण बैल बार-बार पगहा तोड़कर चारा ढूंढने का प्रयास करता है। ताकि अपनी भूख मिटा सकें। चारा न मिलने के कारण भूख से बैलों की केवल हड्डियाँ ही बची हुई हैं। "मैंने चौंककर देखा ... बैल ने पगहा तुड़ा लिया था। पिताजी नहीं चौंके जैसे यह तो सामान्य घटना है। बोले - क्या हो? बैलों का पेट भरता नहीं, पगहा न तुड़ाएँ तो क्या करें। पहले तो दिन में कई बार तुड़ाते थे अब तो गलकर आधे रह गए हैं। मैं देखता रहा - बैलों के शरीर का मांस गलकर बह गया है, हड्डियाँ ही हड्डियाँ बच गई हैं। ..... भयंकर अकाल फैला हुआ है, न पशुओं को चारा मिलता है, न मनुष्य को भोजन।"[8]

अकाल और भुखमरी के कारण लोगों को काम नहीं मिलते हैं। वे जिंदा रहने के लिए काम की तलाश में यहाँ से वहाँ घूम रहे हैं। फिर भी लोगों को काम नहीं मिलते हैं। बिना खाए भूख से लोग तड़प तड़पकर मर रहे हैं। लोग भूख से इस हद तक बेहाल हो गए हैं कि जिंदा रहने के लिए पेड़ की छाल खाकर जीवित रहने का प्रयास करता है। यहाँ तक कि लोग गोबर से भी अन्न निकालकर खाते हैं। ताकि किसी तरह अपनी भूख को शांत कर सकें। गरीबी और भुखमरी से लोग पेड़ों की छाल चोरी करके खाने के लिए विवश हो रहे हैं। "'अब बबुआ, खाने बिना हम लोग तड़पकर मर रहे हैं, यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ घूम रहे हैं कुछ पाने के जोगाड़ में ... अब क्या बताएँ मालिक, अब तो इसी का सहारा रह गया है न .... पेड़ की छाल है।....लेकिन बबुआ हम लोगों के पास पेड़ भी तो नहीं हैं। किसी के पेड़ की छाल काटो तो गाली मार सहनी पड़ती है।' पेड़ की छाल आदमी खाता है- कितना अमानुषिक। उफ़! मेरे लिए मानव की यह बेबसी नई नहीं है। मैंने उसे कई रूपों, रंगों के बीच यात्राएँ की हैं - गोबरहा-पशुओं के गोबर में से अन्न के दाने निकालकर खाना क्या कम बेबसी है?"[9]

रामदरश मिश्र ने 'एक वह' कहानी में भी समाज का ही यथार्थ वर्णन किया है। प्रस्तुत कहानी में गरीबी, भुखमरी के साथ-साथ समय के साथ बदलते लोगों के रिश्ते और पारिवारिक विघटन का भी चित्रण हुआ है। "'एक वह' कहानी का ताऊ जो बात-बात पर रामचरित मानस की चौपाइयाँ दुहराता है, परिवार से परित्यक्त है और शहर के किसी कोने में चने-मुरमुरे की जरा-जीर्ण दूकान खोलकर पेट पालता है कि एक दिन बुखार से मरा हुआ पाया जाता है। उसके आसपास गरीबी हटाओं पोस्टर चिपके उसका मुँह चिढ़ा रहे होते हैं। रामदरश मिश्र ने इस बूढ़े का ऐसा शब्द चित्र खींचा है कि इस देश में चलाये गए गरीबी हटाओ के पोस्टर के खोखलेपन की पोल खुल जाती है।"[10]

'एक वह' कहानी के ताऊ गाँव से शहर आता है। परन्तु उसके पास शहर में रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं है। दिल्ली महानगर के कॉलोनी के एक गोल चक्कर को ही अपना घर बना लेता है। वह परिवार द्वारा परित्यक्त लग-भग अस्सी साल के बुजुर्ग व्यक्ति चने मुरमुरे बेचकर सड़क को अपना घर बनाकर जी रहा था। ताऊ के जीवन की समस्या को लेखक ने केवल ताऊ तक सीमित न रखकर सर्वव्यापी बना दिया है। जिस कारण से लेखक कहता है कि वह इस देश के कहीं का भी निवासी हो सकता है। "वह बुड्ढा कौन था, कहाँ का था, पता नहीं। वैसे वह इस देश का कोई भी हो सकता है और कहीं का भी हो सकता है। बस वह था और दिल्ली महानगर की एक कॉलोनी के एक गोल चक्कर पर बैठकर कभी मुंगफलियाँ, कभी भुट्टा, कभी चने-मुरमुरे बेचा करता था। उसके पास काठ का एक बक्सा था और एक टूटी चारपाई, वही गोल चक्कर उसका घर था और वही दुकान।"[11] ताऊ के पास रहने के लिए घर न होने के कारण चारपाई ही एकमात्र उसका सहारा था। जाड़ों की रातों में उसी चारपाई पर पुरानी फटी हुई रजाई ओढ़कर खुले आसमान के नीचे सोता था। गर्मी के समय में उसी चारपाई में रजाई तानकर छाँह बना लेता था। "जाड़ों की रातों में भी वह एक फटी रजाई ओढ़कर खुले आसमान के नीचे उसी चारपाई पर सोता था और गर्मी की धूप में उसी चारपाई को खड़ी कर उस पर अपनी फटी रजाई तानकर छाँह बना लेता था। हाँ, उसके पास एक पुरानी बरसाती भी थी जिसे वह बरसात के दिनों में अपने खुले मकान के ऊपर तान लेता था और जब बारिश बहुत तेज हो जाती थी तो पास के किसी बरामदे में सरक जाता था।"[12] यह ताऊ की स्थिति नहीं, देश के सभी बेघर लोगों की स्थिति थी। जिनके के पास अपना घर नहीं था। वे सड़क को ही अपना घर बना लेता था और उसी खुले आसमान के नीचे के घर में ही ताऊ की तरह बुखार या किसी साधारण बीमारी में बिना दवा के अपनी अंतिम साँस लेता था। उनके जीवन के ठहराव को अभिव्यक्त करने के लिए कहानीकार मिश्र कहते है कि वह बिना किसी उद्देश्य के श्मशान के बरगद की भांति वर्षा, शीत, गर्मी झेल रहा था। इस कहानी में ही कहानीकार ने समय के साथ बढ़ रहे पारिवारिक विघटन का भी चित्रण किया है। वह बीमार होकर जब काम करने में अक्षम हुआ तो परिवार के लिए वह बोझ बन गया। जिस कारण से उसे घर से भाई और बहू ने निकाल दिया। दिल्ली आकर कुछ कमाने लगा तो पुनः परिवार के लिए प्यारा बन गया। "वह बीमार हो गया था और बहुत दिन तक बीमार रहा। भाई-भयहु के लिए वह बोझ बन गया। हाँ, जब दिल्ली में आकर दो-चार आने कमाने लग गया तो फिर घर का प्यारा बन गया।"[13]

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य के सशक्त कहानीकार रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन का यथार्थ एवं जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन और संस्कृति का यथार्थ वर्णन हुआ है। 'माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' कहानी में गाँव के प्रति लगाव होने के कारण अकाल तथा भुखमरी से त्रस्त होकर भी पिताजी गाँव छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता है। वह पुत्र के साथ जाने के लिए तैयार नहीं होता है। मिश्र ने अपनी कहानियों में तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी, अकाल, भुखमरी, बीमारियों से त्रस्त जीवन का सटीक चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में घटते मानवीय मूल्य और बढ़ते पारिवारिक विघटन का भी चित्रण किया है। अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन और समाज की समस्याओं को बारीकी से उभारा है।

सन्दर्भ सूची :

1. मिश्र, रामदरश (2022) प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ - 7
2. वही, पृष्ठ - 14
3. वही, पृष्ठ - 8
4. वही, पृष्ठ - 9
5. वही, पृष्ठ - 11
6. वही, पृष्ठ - 11
7. वही, पृष्ठ - 11
8. वही, पृष्ठ - 19
9. वही, पृष्ठ - 23
10. वही, पृष्ठ - 12
11. वही, पृष्ठ - 28
12. वही, पृष्ठ - 29
13. वही, पृष्ठ - 33

दिगंत बोरा
सहायक प्राध्यापक (हिंदी), जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय
बोकाखात, असम, ईमेल : borahd52@gmail.com